रिकार्ड–महफिल में जल उठी..... ओमशांति प्रातःक्लास 20.9.67

रुहानी बाप रुहानी बच्चों को श्रीमत देते हैं। कब कोई की चलन अच्छी नहीं होती है तो मां–बाबा कहते हैं कि शल्ला ईश्वर तुमको अच्छी मत दें। बिचारों को यह तो पता नहीं कि ईश्वर सचमुच मत देते हैं। कब देते हैं?अब तुम बच्चों को तो ईश्वरीय मत मिल रही है अर्थात् रुहानी बाप रुहानी बच्चों को श्रेष्ठ मत दे रहे हैं श्रेष्ठ बनने लिए। अभी तुम समझते हो कि हम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बन रहे हैं। बाप हमको कितनी उचं मत दे रहे हैं। हम उनकी ही मत पर चलकर मानुष से देवता बन रहे हैं। तो सिद्ध होता है कि मनुष्य को देवता बनाने वाला वो ही बाप हैं सिख लोग भी गाते हैं कि मानुष से देवता किये.....। तो जरूर मनुष्य से देवता बनाने की मत देते होंगे। उनकी महिमा भी गाते हैं एक ओंकार .....निर्भय .....तुम सभी निर्भयी हो जाते हो। अपने को आत्मा समझते हो ना। आत्मा को कोई भी भय नहीं रहता है। बाप कहते हैं कि निर्भय बनो तो डर वा भय फिर भी किस बात का?यह तो शास्त्रों में कहानी लिख दी है कि लड़ाई हुई। फिर एक माई ने सभी अंगों पर हाथ फिराया , लज्जा के मारे एक अंग पर हाथ नहीं फेर सकी फिर उसको ही गदा मारी.....यह सब हैं दण्ड कथायें। मारने आदि की तो कोई बात ही नहीं है। तुमको कोई भय नहीं। तुम तो अपने घर पर बैठे भी बाप की श्रीमत लेते रहते हो। अब श्रीमत किनकी, कौन देते हैं,यह बातें गीता में तो हैं ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो। बाप कहते हैं कि तुम पतित बन गये हो। अभी पावन बनने लिए मामेकम् याद करो। यह मेला है पुरुषोत्तम बनने लिए संगमयुग का। बहुत आकर श्रीमत लेते हैं। इसको ही कहा जाता है ईश्वर के साथ बच्चों का मेला। ईश्वर भी निराकार तो बच्चे (आत्माएं) भी निराकार। हम आत्मा हैं यह पक्की2 आदल डालनी है। जैसे खिलौने को चाभी दी जाती है तो डांस करने लगता है। तो आत्मा भी इस शरीर रूपी खिलौने की चाभी है। .....इसमें नहीं हो तो कुछ भी कर नहीं सके। तुम हो चिल्ड्रेन खिलौने। खिलौने को चाभी नहीं दी जावे तो काम का नहीं रहेगा। खड़ा हो जावेगा। आत्मा भी चैतन्य चाभी है और यह अविनाशी चैतन्य चाभी है। बाप समझाते हैं कि मैं तो देखता ही हूं आत्मा को। आत्मा सुनती है। यही पक्की टेव डालनी है। इस चाभी बिना तो शरीर चल ही नहीं सके। इसको यह चाभी अविनाशी मिली हुई है। 5000वर्ष इस चाभी को लगते हैं फिरने में। चैतन्य चाभी होने कारण चक्र फिरता ही रहता है। यह है चैतन्य खिलौना। बाप भी चैतन्यात्मा है। जब फिर चाभी खतम हो जाती है तो फिर बाप नये सिर युक्ति रचते हैं कि मुझे याद करो तो चाभी फिर से लग जावेगी अर्थात् आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेगी। जैसे मोटर में से पेट्रोल खतम होने पर फिर से भरा जाता है ना। अब तुम्हारी आत्मा समझती है कि हमारे में पेट्रोल कैसे भरा जावेगा। बैटरी खाली होती है तो फिर से उसमें लाइट भरी जाती है ना। बैटरी खाली होती है माना ही कि लाइट खतम हो जाती है। अब तुम्हारी आत्मा रूपी बैटरी भी भरती है। जितना याद करेंगे उतना2 पावर भरती जावेगी। इतना 84जन्मों को चक्र लगाय कर बैटरी खाल (खाली) हो गई है। सतो,रजो,तमो में आये हो। अब फिर बाप आया है चाभी देने अथवा बैटरी को भरने। पावन नहीं है तो मनुष्य कैसे बंदर मिसल बन जाते हैं। तो अब याद से बैटरी को भरना है। बाप कहते हैं कि मेरे साथ योग लगाओ। यह ज्ञान तो एक बाप देते हैं। सदगति दाता तो वो एक ही बाप है। अभी तुम्हारी बैटरी पूरी भरती है जो कि फिर पूरे 4जन्म लेती है। जैसे ड्रामा में कठपुतलियां नाचती हैं ना। तुम आत्माएं भी वैसे ही कठपुतलियों के मिसल उपर से उतरते2 5000वर्ष में एकदम नीचे ही आ जाते हो। फिर बाप आकर उपर चढ़ाते हैं। बाप अर्थ समझाते हैं चढ़ती कला और उतरती कला का। 5000वर्ष की बात है। तुम समझते हो कि श्रीमत से हमको चाभी मिल रही है। हम पूरे सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर सारा पार्ट रिपीट करेंगे। कितनी सहज बातें हैं समझने और समझाने की। फिर भी बाप कहते हैं कि समझें तो वो ही जिन्होंने कि कल्प पहले भी समझा

होगा। तुम कितना भी माथा मारो जास्ती तो वो समझेंगे ही नहीं। बाप समझ तो सभी को एक ही देते हैं। कहां पर भी बैठे हो बाप को ही याद करना है। भले सामने ब्राह्मणी नहीं बैठी हो तो भी तो तुम बैठ सकते हो। पता है कि बाप की याद से ही हमारे तो विकर्म विनाश होंगे। तो उसी याद में बैठ जाना होता है। कोई को भी बिठलाने की दरकार नहीं है। खाते–पीते,स्नान आदि करते हुए बाप को याद करना है। थोड़ा समय के लिए दूसरा भी कोई सामने बैठ जाते हैं। ऐसे नहीं कि वो कोई तुमको याद करते हैं। नहीं। हर एक को अपने को ही मदद करनी है। ईश्वर ने तो मत दी है कि ऐसे2 करो तो तुम्हारी दैवी बुद्धि बन जावेगी। यह टैम्टेशन दी जाती है। श्रीमत तो सभी को देते ही रहते हैं। इतना तो जरूर है कि किनकी आत्मा ठंडी है तो किनकी तेज है। पावरफुल के साथ योग नहीं लगता तो बैटरी भरती नहीं है। बाप की श्रीमत नहीं मानते हैं। योग लगता ही नहीं है। तुम अभी फील तो करते हो ना कि हमारी बैटरी भरती जाती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना ही है। इस समय तुमको परमात्मा की श्रीमत मिल रही है। यह तो दुनियां बिल्कुल ही नहीं समझती है। बाप कहते हैं कि मेरी इसी मत से तुम देवता बन जाते हो। इससे उंची चीज तो कोई भी हो नहीं सकती है। वहां पर यह ज्ञान नहीं रहता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुमको पुरुषोत्तम बनाने लिए बाप संगमयुग पर ही आते हैं। जिसका ही फिर यादगार भक्तिमार्ग में बनाते ही आते हैं। दशहरा भी तो मनाते ही हैं ना। जब बाप आता है तो ही दशहरा होता है। 5000वर्ष बाद हर बातें रिपीट होती रहती हैं। तुम बच्चों को ही यह ईश्वरीय मत मिलती है। श्रीमत जिससे ही श्रेष्ठ बने हो। तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी। वो उतरते2 तमोप्रधान भ्रष्ट बन जाती है। फिर बाप ही आकर ज्ञान और योग सिखाकर सतोप्रधान बनाते हैं। बताते हैं कि तुम सीढ़ी से नीचे कैसे उतरते हो। तुम सो देवता थे फिर सो क्षत्रिय सो .....बने। अब फिर शूद्र से तुम ब्राह्मण बने हो। यह ड्रामा चलता रहता है। इसकी आदि ,मध्य,अंत को कोई भी नहीं जानते हैं। बाप ने समझाया है तो अभी तुमको स्मृति आई है। हर एक जन्म की कहानी तो सुना ही नहीं सकेंगे। लिखी भी नहीं जाती है जो कि पढ़कर सुनाई जा सके। यह बाप बैठ समझाते हैं कि अब तुम सो ब्राह्मण बने हो। तुम्हें ही सो देवता बनना है। बाप ने समझाया है कि ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय तीनों ही धर्म मैं ही स्थापन करता हूं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम बाप द्वारा ब्राह्मणवंशी बने हैं। फिर सूर्यवंशी ,चंद्रवंशी बनना है। जो2 नापास होते हैं वो चंद्रवंशी बन जाते हैं। किसमें नापास?योग में। ज्ञान तो बहुत ही सहज समझाया है कि कैसे तुम 84जन्मों का चक्र लगाते हो। मनुष्य तो 84लाख कह देते हैं। तो कितना दूर चले गये हैं। कहते हैं भक्तिमार्ग के अभी कलियुग 40हजार वर्ष तक और भी चलना है। यहां पर तो तुम कहते हो कि अन्त है। वो सब है मनुष्य मत। तुमको तो मिल रही है ईश्वरीय मत। ईश्वर तो आते ही हैं एक बार। तो उनकी मत भी एक बार ही मिलेगी ना। एक ही देवी देवता धर्म था। जरूर उनको उसके आगे ईश्वरीय मत मिली थी। वो तो हुआ संगमयुग। बाप आकर दुनियां बदलाते हैं। तुम अब बदल रहे हो। तुम कहेंगे कि हम कल्प2 बदलते आये हैं। बदलते ही रहेंगे। यह चैतन्य बैटरी है ना। वो तो है जड़। बच्चों को पता हुआ है कि हर पांच हजार वर्ष बाद बाप आते हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत भी देते हैं। उंच ते उंच भगवान की उंच ते उंच मत मिलती है जिससे ही तुम उंच ते उंच पद पाते हो। तुम्हारे पास जब भी कोई आते हैं तो तुम बोलो कि तुम ईश्वर की संतान हो ना। ईश्वर ही शिवबाबा है। शिवजयंती भी मनाते हैं। वो है भी सदगति दाता उनकी ही उंच मत मिलती है। उनका अपना शरीर तो है ही नहीं। तो किन द्वारा मत देते हैं। तुम भी आत्मा हो तो इस शरीर द्वारा ही तो बातचीत करते हो ना। शरीर बिना तो आत्मा कुछ भी कर नहीं सकती है। निराकार बाप भी फिर आवे कैसे?गायन भी है कि रथ पर आते हैं। फिर कोई ने ....क्या तो कोई ने क्या2 बैठ बनाया है

त्रिमूर्ति भी सूक्ष्मवतन में बैठ दिखाया है। बाप समझाते हैं सूक्ष्मवतन में तो कुछ होता नहीं। यह सब हैं सा. की बातें। बाकी रचना तो सारी यहां ही है ना। तो रचता बाप को भी यहां आना पड़े। पतित दुनियां में ही आकर पावन बनाना है। यहां बच्चों को डायरैक्ट पावन बना रहे हैं। समझते भी हैं फिर भी ज्ञान बुद्धि में बैठता नहीं। कोई को समझाय नहीं सकते। श्रीमत को उठाते ही नहीं तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ नहीं बन सकते। जो समझते ही नहीं वह क्या पद पावेंगे। फिर यहां का हो या प्रजा का हो। जितना सर्विस करेंगे। बाप ने कहा है हड्डी2 सर्विस में देना है। आलराउंड सर्विस करनी है। बाप के सर्विस में हम हड्डी भी देने तैयार हैं। बहुत बच्चियां तो तरफती रहती हैं सर्विस के लिए। बाबा हमको छुड़ाओ तो हम सर्विस में लग जावें। जिससे बहुतों का कल्याण हो। सारी दुनियां तो सेवा करती है जिस्मानी। उससे तो सीढ़ी नीचे ही उतरते आते हैं। अभी इस रुहानी सेवा से चढ़ती कला होती है। हरेक समझते हैं यह फलानी हमसे जास्ती सर्विस करती है। सर्विसेबुल अच्छी बच्चियां है तो सेंटर भी सम्भाल सकती हैं। क्लास में नम्बरवार बैठते हैं। यहां तो नम्बरवार नहीं बिठाते हैं। फंक हो जावेंगे। समझ तो सकते हैं ना। सर्विस नहीं कर सकते हैं तो जरूर पद भी कम हो जावेगा। पद तो नम्बरवार बहुत है ना परंतु वह है सुखधाम। यह है दुःखधाम। वहां बीमारी आदि कोई होती नहीं। बुद्धि से काम लेना पड़ता है। समझना चाहिए हम तो बहुत नीच पद पा लेंगे ;क्योंकि सर्विस तो करती नहीं हूं। सर्विस से ही पद मिल सकता है। अपनी जांच करनी चाहिए। हरेक अपनी अवस्था को जानते हैं। मम्मा–बाबा भी सर्विस करते आये हैं। अच्छे2 बच्चे भी हैं। भल नौकरी में हैं उनको कहा जाता है हाफ पे पर भी जाकर सर्विस करो। हर्जा नहीं है। जो बाबा के दिल पर सो ताउसी तख्त पर बैठता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ऐसे ही विजयमाला में आ जाते हैं। अर्पण भी होते हैं ,सर्विस भी करते हैं। कोई भल अर्पण होते हैं ,सर्विस नहीं करते हैं तो पद भी कम हो जावेगा। यह राजधानी स्थापन होती है श्रीमत से। ऐसा कब सुना?अथवा पढ़ाई से राजाई स्थापन होती है। यह कब सुना ,कब देखा?हां, दान–पुण्य करने से राजा के घर जन्म ले सकते हैं। बाकी पढ़ाई से राजाई पद पाये ऐसा तो कब सुना नहीं होगा। किसको पता भी नहीं। तुम पत्थर बुद्धि मनुष्यों को बैठ सुनाते हो। तमोप्रधान पत्थर बुद्धि ही तुम्हारे पास आवेंगे। बाप समझाते हैं तुमने ही 84जन्म पूरे लिए हैं। तुमको अब उपर जाना है। है बहुत ईजी। तुम कल्प2 समझते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप यादप्यार भी नम्बरवार पुरुषार्थ (अनुसार) ही देते हैं। बहुत यादप्यार उनको देंगे जो सर्विस में हैं। दिल पर भी वही चढ़ते हैं। जो सर्विस नहीं करते हैं वह दिल पर कैसे चढ़ेंगे। अपने से पूछना है हम दिल पर चढ़ा हुआ हूं? माला का दाना बन सकता हूं? अनपढ़े जरूर पढ़े आगे भरी ढोवेंगे। बाप तो समझाते हैं बच्चे पुरुषार्थ करें ;परंतु ड्रामा में पार्ट न है तो फिर कितना भी माथा मारो। चढ़ते ही नहीं। कोई न कोई ग्रहाचारी लग जाती है। देह अभिमान से ही फिर और सब विकार आ जाते हैं। मुख्य कड़ी बीमारी देहअभिमान की है। सतयुग में देह अभिमान नाम ही नहीं होता। वहां तो है ही तुम्हारी प्रारब्ध। यह यहां ही बाप समझाते हैं। और कोई ऐसी श्रीमत देते नहीं कि अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। यह मुख्य बात है। लिखना चाहिए निराकार भगवान कहते हैं मुझ एक को याद करो। तुम भी निराकार आत्मा हो। अपन को आत्मा समझो। अपने देह को भी याद न करो। जैसे भक्ति में भी ...शिव की ही पूजा करते हो। अब ज्ञान भी सिर्फ मैं ही देता हूं। बाकी सब है भक्ति। अव्यभिचारी ज्ञान एक ही शिवबाबा से तुमको मिलता है। यह ज्ञान सागर से रत्न निकलते हैं। उस सागर की बात नहीं। यह ज्ञान सागर तुम बच्चों को ज्ञान रत्न देते हैं। जिससे तुम देवता बनते हो। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। सागर से देवता निकला। फिर रत्न दिया है। यह है ज्ञान सागर। तुम बच्चों को रत्न देते हैं। तुम ज्ञान रत्न चुगते हो। आगे पत्थर चुगते थे तो पत्थर बुद्धि बन पड़े। अभी रत्न चुगने से तुम पारस बुद्धि बन जाते हो। पारसनाथ बनते हो। यह पारसनाथ (ल.ना.) विश्व के मालिक थे। भक्तिमार्ग में तो अनेक नाम

अनेक चित्र बना रखे हैं। वास्तव में ल.ना. वा पारसनाथ एक ही है। नेपाल में पशुपति का मेला लगता है। वह भी पारसनाथ ही है। अड़ा सोने का मंदिर है। वहां शिव है उपर में और ब्रह्मा,विष्णु,शंकर और चौथा कृष्ण। चार मुख्य दिखाते हैं। अर्थ कुछ भी समझते नहीं। पारसनाथ तो वही होगा ना जो विश्व का महाराजा बनेंगे। भक्तिमार्ग में जो कुछ गायन आदि करते हैं समझ कुछ भी नहीं है। कितना बड़ा मेला लगता है। मनुष्य कितना धक्का खाते हैं। अभी तो तुमको धक्के खाने की दरकार ही नहीं। भक्तिमार्ग के धक्के खाते उतरते ही आये हो। अभी तो तुम चढ़ती कला में जाते हो। सर्व का भला होता है। जो भक्ति मार्ग में मेहनत करते हैं। बाबा झट सबको पार लगाय देते हैं। कितनी उंच पढ़ाई है। तो इसमें इतना ध्यान भी देना चाहिए ना। रात–दिन कैसे बाबा को याद करें। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाबा कहने से ही बुद्धि एकदम उपर चली जाती है। फिर बाबा से यह वर्सा मिलता है। इस प्रकार युक्ति से किसको समझाने का भी खिर नहीं आता है। उछलते नहीं हैं। वह खुशी नहीं रहती। बच्चों को आंतरिक खुशी होनी चाहिए। अतिइन्द्रिय सुख वर्णन करने आता नहीं है। नहीं तो जाकर सर्विस करे। खुद ही नहीं समझते तो और को कैसे समझावेंगे?है बहुत सहज। किसको भी बोलो तुम सतोप्रधान थे। फिर सीढ़ी उतरते2 तुम तमोप्रधान बने हो। अब फिर बाप .....देवता बन जावेंगे। पहले तो अपन को आत्मा समझना है। तो बैटरी सतोप्रधान बन जावेगी। बाप भी समझाते हैं तो यह दादा भी तो समझाते हैं। सबसे पहले तो मैं समझा सकता हूं। तब ताक इतना उंच पद पाता हूं। अगर नहीं सर्विस कर सकते तो बोल देना चाहिए हम समझा नहीं सकती। ऐसे नहीं कि बीमार कोई समझा नहीं सकते हैं। दो अक्षर सिम्पल ते सिम्पल है। चित्रों पर समझाना तो और ही सहज है। यह झाड़ है, जो उपर में लास्ट में खड़ा है वह ही अब तपस्या कर रहे हैं। तो जरूर पहले नम्बर ही आवेंगे। बाबा बार2 समझाते हैं फिर भी पत्थर बुद्धि समझते नहीं। न किसकी .....सेवा कर सकते हैं। सिर्फ यह याद दिलाओ, खाना खाते समय भी एक/दो को सावधान कर उन्नति को पाओ। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। फिर याद करे न करे कान तक तो आया ना। माया भी कम नहीं है। सेकेंड में भुला देती है। फिर कोई को समझा न सके। घड़ी2 वह याद करने से फिर टेव भी पड़ जावेगी। बहुत हैं जो याद कर नहीं सकते। बाबा के आगे कह देते हैं कि हम याद करते हैं। बाबा कहेंगे पाई भी याद नहीं करते हो। अगर याद करते तो सैकड़ों को शिक्षा देते। मुख्य बात तो यही समझानी है शिवबाब कहते हैं मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। बाबा फील करते हैं बुद्धि में बैठता नहीं है। याद करते ही किसको तीर लग जाये तो झट समझ जाये। बरोबर बाप तो पतित–पावन हैं। वह ही कहते हैं मुझे याद करो। 84का चक्र भी समझाया जाता है। बाबा युक्तियां तो बहुत बताते रहते हैं उपर चढ़ने की। तिलक देते रहो। किसको तिलत देंगे नहीं तो राजतिलक कैसे मिलेगा?सर्विसेबुल बच्चे सर्विस करते रहते हैं तो बल भी मिलता है। सर्विस नहीं करते तो कुछ भी बल नहीं मिलता। श्रीमत की ही कमाल है। बाकी तो सभी है मनुष्य मत। भगवानुवाच तो एक ही बार होता है। कल्प2 बाप आते हैं। जब बैटरियां पूरी भर जाती हैं तो सब आत्माएं उड़ने लग जाती हैं। पवित्र बनने बिगर तो कोई जा नहीं सके। यह नालेज भी तुमको मिला है। बाकी दुनियां में तो कांटे ही कांटे हैं। जिन स्टुडेंट लिए समझते हैं नया ब्लड है, भारत की सम्भाल करेंगे वह ही पत्थर मारते, कितना हंगामा करते रहते हैं। भाषाओं आदि में रखा ही क्या है। कितने प्रकार के दुनियां में विघ्न पड़ते रहते हैं। विघ्न डालने वाले तो मनुष्य ही होते हैं ना। कुछ भी समझ नहीं है। अंग्रेजी तो बहुत जरूरी है ;क्योंकि उन द्वारा ही तुम भीख लेते रहते हो। वह देना बंद करे तो भूख मर जाये ;परंतु यह सब ड्रामा में नूंध है। भारत की भी सम्भाल होनी ही है। फिर भी बाप का देश है ना। अच्छा ,गुडमार्निंग।

एक नया सेंटर मैसूर में खुला है। जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं–

Brhma Kumaris
1371, irwin road,Lashkar mohalla, Mysore-1